जादू तथा ग़ैब की बात बताने के बारे में शरई दृष्टिकोण

लेखक:

शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

उनपर अल्लाह की कृपा की बरखा बरसे!

जादू तथा ग़ैब की बात बताने के बारे में शरई दृष्टिकोण

लेखकः

शैख़ अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़

उनपर अल्लाह की कृपा की बरखा बरसे!

شركاء التنفيذ:

يتاح طباعة هذا الإصدار ونشره بأي وسيلة مع
الالتزام بالإشارة إلى المصدر وعدم التغيير في النص.

Telephone: +966114454900
ceo@rabwah.sa
P.O.BOX: 29465
RIYADH: 11557
www.islamhouse.com

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा दयालु एवं अत्यंत कृपावान है।

प्रस्तावना

सारी प्रशंसा अल्लाह की है तथा दरूद एवं सलाम हो अल्लाह के रसूल, उनके परिजनों, साथियों और उनके मार्ग पर चलने वालों पर।

याद रहे कि जादू महापाप तथा उन सात विनाशकारी गुनाहों में से एक है, जिनसे दूर रहने का आदेश अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दिया है। लेकिन इसके बावजूद आज उसके कई रूप समाज में फलते-फूलते नज़र आ रहे हैं। कभी वह सनसनी पैदा करने वाली फिल्मों में मनोरंजन एवं हास्य के नाम से सामने आता है, कभी त्याग एवं चमत्कार के दावे के साथ सामने आता है, कभी शरई झाड़-फूँक के पर्दे में छिपकर सामने आता है और कभी पारंपरिक चिकित्सा एवं जड़ी-बूटियों द्वारा इलाज आदि के नाम से ज़ाहिर होता है। फलस्वरूप, इस्लाम की सही समझ-बूझ न रखने वाले लोगों के लिए उसकी पहचान करना कठिन हो जाता है।

चूँकि सऊदी अरब के साधारण मुफ़्ती, उलेमा परिषद एवं वैज्ञानिक अनुसंधान तथा इफ़्ता समिति के अध्यक्ष शैख़ अब्दुल अज़ीज बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ की इस पुस्तक में जादू के बारे में इस्लामी दृष्टिकोण तथा ग़ैब की बात बताने का दावा करने वाले के पास जाने के बारे में शरई नज़रिए को आसान भाषा में क़ुरआन एवं हदीस के प्रमाणों के साथ बयान किया गया है, इसलिए इस्लामी कार्य, वक़्फ़, आह्वान और मार्गदर्शन मंत्रालय सऊदी अरब ने इसके प्रकाशन एवं वित्रण का निर्णय लिया है।

दरअसल जादू करने तथा ग़ैब की बात बताने वाले और जादू करने वालों के पास जाने के संबंध में शरई दृष्टिकोण पर आधारित शैख़ बिन बाज़ की यह किताब, उनकी उन मुबारक प्रयत्नों तथा लगातार जारी रहने वाले अथक प्रयासों का एक भाग है, जो उन्होंने लोगों को भलाई की ओर बुलाने, उनके अंदर इस्लाम की समझ विकसित करने, शरई अहकाम बयान करने, अनुचित कार्यों से सावधान करने, मुसलमानों के हितों की रक्षा करने, उन्हें अल्लाह की पवित्र किताब, उसके नबी की सुन्नत तथा सदाचारी पूर्वजों के मार्ग पर

चलने और अन्य विचारधाराओं, पंथों और असत्य धारणाओं का परित्याग करने के आह्वान के संबंध में की हैं।

दरअसल, यही वह पवित्र मार्ग भी है, जिसपर यह शुभ राज्य और उसका सुपथगामी नेतृत्व आगे बढ़ रहा है। अल्लाह करे यह राज्य इसी मार्ग पर चलता रहे और उसे इसी तरह उसकी सहायता, सुयोग और समर्थन मिलता रहे। अल्लाह इस किताब के लेखक प्रख्यात विद्वान शैख़ बिन बाज़ को भी उनके अथक प्रयासों को अनंत प्रतिफल प्रदान करे।

दुआ है कि अल्लाह इस किताब से उसके पाठकों और लाभ उठाने वालों को फ़ायदा पहुँचाए, हम सब को क़ुरआन एवं हदीस का अनुसरण करने का सुयोग प्रदान करे और हमें शैतान के बहकावे से सुरक्षित रखे। अल्लाह ही हमारा संरक्षक है और वही हमें सीधा मार्ग दिखाता है। अल्लाह की कृपा और शांति की बरखा बरसे हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आपके परिजनों एवं सभी साथियों पर।

अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुहसिन अत-तुर्की

इस्लामी कार्य, आह्वान एवं मार्गदर्शन मंत्री, सऊदी अरब

जादू, ग़ैब की बात बताने और इससे संबंधित बातों के बारे में इस्लामी दृष्टिकोण [1]

हर प्रकार की प्रशंसा और स्तुति केवल अल्लाह के लिए है तथा उसकी दया और शांति अवतरित हो उसके अंतिम संदेष्टा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर।

यह देखते हुए कि इन दिनों जादू-टोना करने वाले कुछ लोग दिन प्रति दिन बढ़ते और कुछ नगरों में फैलते जा रहे हैं, जो चिकित्सा की जानकारी रखने का दावा करते हैं और जादू एवं ग़ैबदानी के दावे के ज़रिए इलाज करते हैं तथा इस तरह सीधे सादे आम लोगों को, जो शरीयत की समुचित जानकारी नहीं रखते, अपने छल का शिकार बना लेते हैं, मैं चाहता हूँ कि इस कार्य में, जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदेश के विरोध पर आधारित है, निहित इस्लाम तथा मुसलमानों की अपूर्णीय क्षति का उल्लेख कर दूँ।

चुनांचे मैं अल्लाह से सहायता माँगते हुए अपनी बात का आरंभ करता हूँ। सबसे पहले यह बात ज़ेहन में रहे कि दवा-इलाज करने के जायज़ होने में किसी का कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है। सब लोग यह मानते हैं कि एक मुसलमान उपचार के लिए गुप्त रोगों, सर्जरी तथा मानसिक रोगों आदि के डॉक्टर के पास जा सकता है, जो उसकी बीमारी की पहचान करे और चिकित्सा विज्ञान के अनुसार वांछित वैध दवाओं के ज़रिए उसका इलाज करे। क्योंकि यह साधारण साधनों के प्रयोग का ही एक भाग है और अल्लाह पर भरोसा के विपरीत नहीं है। स्वयं हदीस में आया है कि अल्लाह ने जो भी रोग उतारा है, उसके साथ उसकी दवा भी उतारी है। यह और बात है कि कुछ लोगों के पास उसकी जानकारी होती है और कुछ लोगों के पास नहीं होती। हाँ, यह अच्छी तरह याद रहे कि अल्लाह ने किसी ऐसी चीज़ के अंदर बंदों के लिए शिफ़ा नहीं रखी है, जिसे उनके हक़ में अवैध घोषित किया हो।

अतः किसी रोगी के लिए यह जायज़ न होगा कि वह ग़ैब की बात जानने का दावा करने वाले काहिनों के पास जाए और उनसे अपने रोग की पहचान कराए और उनकी कही हुई बातों को सच मान ले। क्योंकि इस प्रकार के लोग या तो तुक्केबाज़ी से काम लेते हैं या फिर जिन्नात के सहयोग से काम करते हैं। जबकि यह लोग जब गैब की बात जानने का

दावा करते हैं, तो कुफ़्र एवं पथभ्रष्टता के शिकार हो जाते हैं। इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जिसने किसी खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु के बारे में बताने का दावा करने वाले के पास जाकर उससे कुछ पूछा, उसकी चालीस दिन की नमाज़ ग्रहण नहीं होगी।" तथा अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु का वर्णन है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो किसी ग़ैब की बात बताने का दावा करने वाले के पास गया और उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस धर्म का इनकार किया, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया है।" इस हदीस को इमाम अबू दाऊद, इमाम तिरमिज़ी, इमाम नसई और इमाम इब्न-ए-माजा ने रिवायत किया है और इमाम हाकिम ने सहीह कहा है। हाकिम ने सहीह कहा है। हाकिम के शब्द हैं : "जो किसी खोई हुई या चोरी की हुई वस्तु आदि के बारे में जानने का दावा करने वाले अथवा ग़ैब की बात जानने का दावा करने वाले के पास गया और उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस धर्म का इनकार किया, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया है।" तथा इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अनहु का वर्णन है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया : "वह व्यक्ति हममें से नहीं है, जिसने अपशगुन लिया अथवा जिसके लिए अपशगुन लिया गया, ग़ैब की बात बताई या ग़ैब की बात पूछी, जादू किया या जादू करवाया। जिसने किसी ग़ैब की बात बताने वाले के पास जाकर उसकी बात को सच माना, उसने उस शरीयत का इनकार किया, जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर उतारी गई है।" इसे बज़्ज़ार ने जय्यिद सनद के साथ रिवायत किया है। इन हदीसों के अंदर खोई हुई अथवा चोरी की हुई चीज़ की सूचने देने वाले, ग़ैब की बात बताने वाले तथा जादूगरों आदि के पास जाने, उनसे कुछ पूछने तथा उनकी कही हुई बात को सच मानने की मनाही के साथ-साथ इससे सावधान भी किया गया है। अतः शासनकर्ताओं एवं प्रशासन के लोगों का कर्तव्य है कि इस तरह के लोगों के पास जाने का सख़्ती से खंडन करें और हाट-बाज़ारों में इस प्रकार का करतब दिखाने वालों को सख़्ती से रोकें। इनसान को इस धोखे में नहीं पड़ना चाहिए कि उनकी कुछ बातें कभी-कभी सही निकल जाती हैं और उनके पास बड़ी संख्या में लोग आते हैं। क्योंकि यह लोग अज्ञानी हैं और लोगों को इनके धोखे में नहीं आना चाहिए। साथ ही यह कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनके पास जाने, इनसे

कुछ पूछने और इनकी बात को सच मानने से मना किया है। वैसे है भी यह बहुत ही बुरा, अनिष्टकर और कड़वे परिणामों वाला कार्य और इसे करने वाले लोग झूठे एवं दुश्चरित्र हुआ करते हैं। इसी तरह इन हदीसों से गैब की बात बताने वाले और जादूगर के काफ़िर होने का भी प्रमाण मिलता है। इसका कारण यह है कि यह दोनों लोग ग़ैब की बात जानने का दावा करते हैं और इस तरह का दावा करना कुफ़्र है। दूसरी बात यह है कि यह दोनों अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जिन्नात की सेवा तथा उनकी इबादत करते हैं और ऐसा करना भी कुफ़्र एवं शिर्क है। इसी प्रकार उनके ग़ैब जानने के दावे को सच मानने वाला भी उन्हीं की तरह है। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस प्रकार के लोगों से अपना कोई संबंध न होने की बात कही है। साथ ही इलाज के नाम पर इनके द्वारा किए जाने वाले पाखंडों, जैसे जादुई लकीरें खींचना तथा तहरीरें लिखना अथवा सीसा उंडेलना आदि को मान्यता देना भी जायज़ नहीं है। क्योंकि यह सारी चीज़ें कहानत एवं फ़रेब के दायरे में आती हैं और इन्हें मान्यता देना इन्हें करने वालों के असत्य एवं कुफ़्र पर आधारित कार्यों को बढ़ावा देने के दायरे में आता है। इसी तरह किसी मुसलमान के लिए जायज़ नहीं है कि उनके पास जाकर उनसे यह पूछे कि अपने पुत्र अथवा रिश्तेदार की शादी किससे कराए या फिर उनसे यह जानने का प्रयास करे कि पति-पत्नी एवं उनके परिवारों के बीच प्रेम एवं सद्भाव रहेगा या शत्रुता एवं अलगाव पैदा हो जाएगा?

क्योंकि इस तरह की बातें गैब के दायरे में आती हैं, जिन्हें पवित्र एवं महान अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।

जादू उन हराम कार्यों में से है, जो कुफ़्र पर आधारित हैं। अल्लाह तआला ने सूरा बक़रा के अंदर जादू सिखाने वाले दो फ़रिश्तों का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया है : "जबकि दोनों किसी को जादू नहीं सिखाते, जब तक ये न कह देते कि हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः, तू कुफ़्र में न पड़। फिर भी वे उन दोनों से वो चीज़ सीखते, जिसके द्वारा वे पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें और वे अल्लाह की अनुमति बिना इसके द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे, जो उनके लिए हानिकारक हों और लाभकारी न हों और वे भली-भाँति जानते थे कि जो इसका ख़रीदार बना, परलोक में

उसका कोई भाग नहीं तथा कितनी बुरी है वह वस्तु, जिसके बदले वे अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं, यदि वे जानते होते!"[1]

इन हदीसों से स्पष्ट रूप से मालूम होता है कि जादू कुफ़्र है और जादूगर पति-पत्नी के बीच अलगाव पैदा करने का काम करते हैं। इसी तरह इनसे यह भी मालूम होता है कि जादू स्वयं प्रभावकारी नहीं है। न वह किसी का भला कर सकता है, न बुरा। उसका प्रभाव अल्लाह की नियत अनुमति पर निहित है। क्योंकि पवित्र एवं महान अल्लाह ही भलाई एवं बुराई का स्रष्टा है। लेकिन आज शरीयत को प्रदूषित करने वाले इन पापियों के कारण, जिन्होंने मुश्रिकों से इन आडंबरों को सीखा है और इनके ज़रिए आम लोगों को पथभ्रष्ट किया है, मामला काफ़ी संगीन हो चुका है और हालात काफ़ी बिगड़ चुके हैं। इसी तरह इन आयतों से यह बात भी मालूम हुई कि जादू सीखने वाले जो कुछ सीखते हैं, वह उनके लिए लाभदायक नहीं, बल्कि हानिकारक है और इस प्रकार के लोगों का अल्लाह के निकट कोई भाग नहीं है। दरअसल यह एक बहुत बड़ी चेतावनी है, जो यह बताती है कि इस प्रकार के लोग दुनिया एवं आख़िरत में घाटे में रहेंगे और इन्होंने स्वयं का कोड़ी का भाव सौदा कर लिया है। यही कारण है कि पवित्र एवं महान अल्लाह ने उनके इस सौदे की निंदा करते हुए कहा है : "तथा कितना कितनी बुरी है वह वस्तु, जिसके बदले वे अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं, यदि वे जानते होते!"[2]याद रहे कि यहाँ आयत में प्रयुक्त शब्द "الشراء" बेचने और सौदा करने के अर्थ में आया है।

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह हमें जादूगरों, ग़ैब की बात बताने वालों और सभी नज़र बंदी करने वालों की बुराई से सुरक्षित रखे, मुसलमानों की उनकी बुराई से बचाए, मुस्लिम शासकों को उनसे सावधान रहने और उनके बारे में अल्लाह के आदेश को लागू करने का सुयोग प्रदान करे कि लोग उनकी हानि और कुकर्मों से सुरक्षित रहें। निश्चय ही वह दाता एवं दयावान है।

---

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 102

[2] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 102

पवित्र एवं महान अल्लाह की दया एवं उपकार ही का नतीजा है कि उसने बंदों को जादू से बचाव का तरीक़ा भी बता दिया है और उसके उपचार की पद्धति भी।

अब आइए जादू के कुप्रभाव से बचाव और जादू किए हुए व्यक्ति के उपचार के कुछ तरीक़े बताते हैं, जो स्वयं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताए हैं।

इस सिलसिले का आरंभ जादू का कुप्रभाव होने से पहले उससे बचाव के तरीक़ों से करते हैं। इसका सबसे महत्वपूर्ण और लाभदायक तरीका यह है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित शरई अज़कार, दुआओं तथा अल्लाह की शरण लेने पर आधारित वाक्यों का सहारा लिया जाए। मसलन हर फ़र्ज़ नमाज़ से सलाम फेरने तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए अज़कार पढ़ने के बाद आयत अल-कुरसी पढ़ी जाए। इसी तरह सोते समय उसे पढ़ा जाए। याद रहे कि आयत अल-कुरसी पवित्र कुरआन की महानतम आयत है। उसके शब्द हैं : "अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह जीवित तथा नित्य स्थायी है। उसे ऊँघ तथा निद्रा नहीं आती। आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है। कौन है, जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना अनुशंसा (सिफ़ारिश) कर सके? जो कुछ उनके समक्ष और जो कुछ उनसे ओझल है, सब जानता है। लोग उसके ज्ञान में से उतना ही जान सकते हैं, जितना वह चाहे। उसकी कुर्सी आकाश तथा धरती को समोए हुए है। उन दोनों की रक्षा उसे नहीं थकाती। वही सर्वोच्च, महान है।"[1]

इसी तरह हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद {قل هو الله أحد}[2], {قل أعوذ برب الفلق}[3]तथा {قل أعوذبرب الناس}[4], यह तीनों सूरे पढ़ी जाएँ। इसी प्रकार इन तीन

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 255

[2] सूरा अल-इख़लास, आयत संख्या : 1

[3] सूरा अल-फ़लक़, आयत संख्या : 1

[4] सूरा अन-नास, आयत संख्या : 1

सूरों को फ़ज्र की नमाज़ के बाद दिन आरंभ होते समय, मग्रिब की नमाज़ के बाद रात आरंभ होते समय और सोते समय पढ़ा जाए। इसी तरह सूरा बक़रा की अंतिम दो आयतों को दिन के आरंभिक भाग में पढ़ा जाए। इन दो आयतों के शब्द हैं : "रसूल उस चीज़ पर ईमान लाया, जो उसके लिए अल्लाह की ओर से उतारी गई है तथा सब ईमान वाले उसपर ईमान लाए। वे सब अल्लाह तथा उसके फ़रिश्तों और उसकी सब पुस्तकों एवं रसूलों पर ईमान लाए। (वे कहते हैं :) हम उसके रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते। हमने सुना और हम आज्ञाकारी हो गओ। हे हमारे पालनहार! हमें क्षमा कर दे और हमें तेरे ही पास आना है।"[1] यहाँ से सूरा के अंत तक पढ़ना है।

तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस में है कि आपने फ़रमाया : "जिसने रात में आत अल-कुर्सी पढ़ ली, अल्लाह की ओर से एक सुरक्षाकर्मी उसके लिए नियुक्त होता है और सुबह तक शैतान उसके निकट नहीं जाता।" एक और सहीह हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जिसने सूरा बक़रा की अंतिम दो आयतें रात में पढ़ लीं, वह उसके लिए काफ़ी हो जारी हैं।" इसका अर्थ यह है कि यह दोनों आयतें हर बुराई से बचाव के लिए पर्याप्त होंगी। इसी प्रकार रात एवं दिन में अधिक से अधिक अल्लाह के संपूर्ण शब्दों द्वारा उसकी पैदा की हुई चीज़ों की बुराई से पनाह माँगे। साथ ही किसी आबादी वाले क्षेत्र, गैरआबाद इलाक़े, आकाश एवं समुद्र के किसी स्थान में रुकते समय भी ऐसा करे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने किसी स्थान में उतरते समय यह दुआ पढ़ी : "मैं अल्लाह की पैदा की हुई चीज़ों की बुराई से उसके संपूर्ण शब्दों की शरण में आता हूँ", उसे कोई वस्तु वह स्थान छोड़ने तक नुक़सान नहीं पहुँचा सकती।" इसी तरह जादू के कुप्रभाव से बचाव का एक तरीका यह है कि मुसलमान दिन एवं रात के आरंभिक भाग में तीन बार यह दुआ पढ़े : "शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से, जिसके नाम के साथ धरती और आकाश में कोई वस्तु हानि नहीं पहुँचा सकती तथा वह सुनने वाला और जानने वाला है।" अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहीह हदीस में इसकी प्रेरणा दी है और बताया है कि इससे हर बुराई से सुरक्षा प्राप्त होती है। यह अज़कार और

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 285

अल्लाह की शरण माँगने के शब्द, यदि सच्चे मन, विशुद्ध ईमान, अल्लाह पर भरोसा और उन शब्दों के अंदर कही गई बातों पर विश्वास के साथ उन्हें पढ़ा जाए, तो जादू के कुप्रभाव के साथ-साथ अन्य बुराइयों से बचाव का भी बहुत ही महत्वपूर्ण साधन हैं। साथ ही यदि पूर्ण विनम्रता के साथ इन्हें पढ़ा जाए और जादू के कुप्रभाव से मुक्ति माँगी जाए, तो इनके ज़रिए जादू का असर हो जाने के बाद भी उससे मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। जादू के कुप्रभाव के उपचार के लिए अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कई दुआएँ साबित हैं। एक हदीस मेंे है कि आप इस दुआ के ज़रिए अपने साथियों का उपचार करते थे : "ऐ अल्लाह, लोगों के पालनहार! कष्ट दूर कर दे तथा रोग से मुक्ति प्रदान कर। तू ही रोग से मुक्ति प्रदान करता है। तेरे सिवा कोई रोग से मुक्ति प्रदान करने वाला नहीं है। रोग से ऐसा छुटकारा प्रदान कर कि फिर कोई रोग शेष न रहे।" यह दुआ आप तीन बार कहते थे। इस शृंखला की एक कड़ी वह दुआ भी है, जिसके द्वारा जिबरील अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उपचार किया था। उसके शब्द हैं : "अल्लाह का नाम लेकर मैं तुहारे लिए पनाह मांगता हूँ , तुम्हें कष्ट देने वाली प्रत्येक वस्तु, प्रत्येक प्राणी की बुराई अथवा ईर्ष्या करने वाली हर आँख से। अल्लाह तुम्हें रोग से मुक्ति प्रदान करे। अल्लाह का नाम लेकर मैं तुमपर पढ़ता हूँ।" इस दुआ को तीन बार पढ़ना चाहिए। जादू किए हुए व्यक्ति के इलाज का एक तरीका और भी है। यह तरीका विशेष रूप से उस व्यक्ति के लिए लाभकारी है, जो जादू के कारण स्त्री से संभोग की शक्ति खो चुका हो। तरीका यह है कि आदमी बैरी के सात हरे पत्तों को पत्थर आदि से कूटने के बाद उसे किसी बर्तन में रख ले और उसपर इतना पानी डाले कि स्नान के लिए पर्याप्त हो और फिर उसपर आयत अल-कुरसी, "क़ुर या अय्युहा अल-काफ़िरून"[1], "क़ुल हु अल्लाहु अहद"[2], "क़ुल अऊज़ु बि-रब्ब अल-फ़लक़"[3], "क़ुल अऊज़ु बि-रब्ब अन-नास"[4], सूरा अल-आराफ़ की जादू से संबंधित आयतें, जो इस प्रकार हैं : "तो हमने मूसा को वह्य की कि अपनी लाठी

[1] सूरा अल-काफ़िरून, आयत संख्या : 1

[2] सूरा अल-इख़लास, आयत संख्या :11

[3] सूरा अर-फ़लक़, आयत संख्या : 1

[4] सूरा अन-नास, आयत संख्या : 1

फेंको और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी। अतः सत्य सिद्ध हो गया और उनका बनाया मंत्र-तंत्र व्यर्थ होकर रह गया। अंततः वे प्राजित कर दिए गए और तुच्छ तथा अपमानित होकर रह गए।"[1]सूरा यूनुस की आयतें, जिनमें सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने फ़रमाया है : "और फ़िरऔन ने कहा : (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं, उन्हें मेरे पास लाओ। और जब उन्होंने फेंक दिया, तो मूसा नो कहा : तुम जो कुछ लाये हो, वह जादू है। निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में, अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता। और अल्लाह सत्य को, अपने आदेशों के अनुसार, सत्य कर दिखाएगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।"[2]और सूरा ताहा की निम्नलिखित आयतें : "उन्होंने कहा : हे मूसा! तू फेंकता है या पहले हम फेंकें? मूसा ने कहा : बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उनकी रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उनके जादू (के बल) से दौड़ रही हैं। इससे मूसा अपने मन में डर गया। हमने कहाः डर मत, तू ही ऊपर रहेगा। और फेंक दे, जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जाएगा, जो कुछ उन्होंने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बनाकर लाए हैं तथा जादूगर सफल नहीं होता, जहाँ से आए।"[3]

इन सारी आयतों को पानी पर पढ़ने के बाद उसमें से तीन घूँट पानी पी ले और शेष पानी से स्नान कर ले। इससे अल्लाह ने चाहा तो परेशानी ख़त्म हो जाएगी। यदि आवश्यकत हो तो ऐसा दो या उससे अधिक बार भी परेशानी दूर होने तक किया जा सकता है।

जादू के इलाज का एक तरीका, बल्कि सबसे लाभकारी तरीकों में से एक तरीका यह है कि भूमि अथवा पहाड़ आदि के उस स्थान का पता लगाया जाए, जहाँ वह वस्तुएँ रखी हुई हों, जिनके द्वारा जादू किया गया है। यदि स्थान का पता लगा लिया जाए और उन चीज़ों को निकालकर नष्ट कर दिया जाए, तो जादू का प्रभाव खत्म हो जाता है।

---

[1] सूरा अल-आराफ़, आयत संख्या : 117-119

[2] सूरा यूनुस, आयत संख्या : 79-82

[3] सूरा ताहा, आयत संख्या : 65-69

ये, जादू से बचाव और उसके उपचार से संबंधित कुछ बातें हैं, जो अल्लाह की अनुमति से फ़िलहाल बयान की जा सकी हैं और सुयोग प्रदान तो वही करता है।

लेकिन जहाँ तक जादू का उपचार जादू के ज़रिए करने, यानी जिन्नात को प्रसन्न करने के लिए जानवर ज़बह करने या चढ़ावा चढ़ाने की बात है, तो इसकी अनुमति नहीं है। क्योंकि यह शैतान का अमल, बल्कि महानतम शिर्क है। अतः इस तरह की चीज़ों से दूर रहने की ज़रूरत है। इसी तरह उसका इलाज ग़ैब की बात बताने वालों, चोरी की हुई अथवा खोई हुई वस्तु की सूचना देने वालों और नज़रबंदी का करतब दिखाने वालों के द्वारा करवाने और उनके बताए हुए उपचार पद्धति का प्रयोग करने की भी अनुमति नहीं है। क्योंकि एक तो यह लोग अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और दूसरे यह कि ग़ैब की बात जानने का दावा करते हैं और लोगों को फ़रेब में डालते हैं। यही कारण है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके पास जाने, उनसे कुछ पूछने और उनकी बताई हुई बात को सच मानने से मना किय है, जिसका उल्लेख इस किताब के आरंभ में हो चुका है। तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सहीह हदीस में है कि आपसे जादू के द्वार जादू के उपचार के बारे में पूछा गया, तो आपने फ़रमाया : "यह एक शैतानी कार्य है।" इस हदीस को इमाम अहमद एवं इमाम अबू दाऊद ने जय्यिद सनद के साथ रिवायत किया है। इस हदीस में आए हुए शब्द "النشرة" का अर्थ है, जादू से प्रभावित व्यक्ति से जादू के असर को ख़त्म करना। इस हदीस से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुराद जादू का असर ख़त्म करने का वह तरीक़ा है, जो अज्ञान काल के लोगों में रायज था। यानी स्वयं जादू करने वाले के द्वारा जादू का प्रभाव ख़त्म करवाना या फिर किसी दूसरे जादूगर की मदद से जादू के द्वारा ही उसके असर को ख़त्म करना।

अब रहा प्रश्न शरई झाड़-फूँक और वैध दवाओं एवं उपचार के ज़रिए उसके इलाज का, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है, जैसा कि पीछे बयान किया जा चुका है। यह बात स्पष्ट रूप से महान इस्लामिक विद्वान इब्न-अल-क़य्यिम तथा एक और विद्वान अब्दुर रहमान बिन हसन ने अपनी किताब "फ़त्ह अल-मजीद" में कही है। इसी तरह अन्य विद्वानों ने भी इसका उल्लेख किया है।

दुआ है कि अल्लाह मुसलमानों को हर बुराई से बचाए, उनके धर्म की सुरक्षा करे, उन्हें धर्म का विशुद्ध ज्ञान प्रदान करे तथा उन्हें शरीयात विरोधी हर काम से बचाए। अल्लाह की कृपा एवं शांति की धारा बरसे उसके बंदे और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनके परिजनों और साथियों पर।

पत्नी का पति पर जादू करना [16]

अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह बिन बाज़ की ओर से सम्मानित भाई ... को प्रेषित। अस-सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु। तत्पश्चात :

मुझे आपका पत्र मिला और उसमें नई पत्नी से संभोग के इरादे के समय आपको होने वाली परेशानी, उसके बाद आपके एक शैख़ के पास जाने और उसकी ओर से आपके लिए दिए गए फ़तवे के साथ-साथ आपकी पुरानी पत्नी के उस अमल से भी अवगत हुआ, जो नई पत्नी से आपको संभोग से रोकने का कारण बना था।

उत्तर : यदि पुरानी पत्नी ने मान लिया कि उसने ऐसा किया है या फिर उसके ऐसा करने का प्रमाण मिल गया, तो सचमुच उसने एक बहुत बड़े गुनाह का काम ही नहीं, बल्कि कुफ़्र और गुमराही का कार्य किया है। क्योंकि उसका यह कार्य जादू के दायरे में आता है, जो कि हराम है और जादू करने वाला काफ़िर है, जैसा अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : "तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे, उनका अनुसरण करने लगे। जबकि सुलैमान ने कभी कुफ़्र (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़्र तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे तथा वे उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के दो फ़रिश्तों; हारूत और मारूत पर उतारी गयीं, जबकि वे दोनों किसी को जादू नहीं सिखाते, जब तक ये न कह देते कि हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः, तू कुफ़्र में न पड़। फिर भी वे उन दोनों से वो चीज़ सीखते, जिसके द्वारा वे पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें और वे अल्लाह की अनुमति बिना इसके द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे, परन्तु फिर भी ऐसी बातें सीखते थे, जो उनके लिए हानिकारक हों और लाभकारी न हों और वे भली-भाँति जानते थे कि जो इसका ख़रीदार बना, परलोक में उसका कोई भाग नहीं तथा कितना बुरा उपभोग्य है, जिसके बदले वे अपने प्राणों का सौदा कर रहे हैं, यदि वे जानते होते!"[1] यह पवित्र आयत इस बात का प्रमाण है कि जादू कुफ़्र है, जादूगर काफ़िर है, जादूगर जो कुछ सीखते हैं वह उनके हक़ में लाभदायक होने की बजाय हानिकारक है, उनका एक उद्देश्य पति-पत्नी के बीच अलगाव पैदा करना भी होता है और इस तरह के लोगों की क़यामत के

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या :102

दिन मुक्ति में कोई हिस्सेदारी नहीं होगी। जबकि सहीह हदीस द्वारा सिद्ध है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "सात विनाशकारी वस्तुओं से बचो।" पूछा गया कि ऐ अल्लाह के रसूल! यह सात विनाशकारी चीज़ें क्या हैं? तो आपने कहा : आप ने फरमाया : "किसी को अल्लाह का साझी ठहराना, जादू करना, किसी बेगुनाह की हत्या करना, सूद लेना, अनाथ का माल हड़पना, रणभूमि से फ़रार होना एवं मोमिन पाकदामन महिलाओं पर झूठा लांछन लगाना।"

रहा प्रश्न उस मौलवी का जिसने तुमको दवा दी थी, तो ज़ाहिर सी बात है कि वह भी उस स्त्री की तरह ही जादू करने वाला है। क्योंकि जादू के कार्यों से जादूगर ही अवगत होते हैं। साथ ही वह खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु की सूचना देने वालों में से भी है, जो बहुत-से अवसरों पर ग़ैब की बात बताने का दावा करने के लिए जाने जाते हैं। अतः एक मुसलमान को अनिवार्य रूप से इस प्रकार के लोगों से सावधान रहना और उनकी बताई हुई बातों को सच मानने से बचना चाहिए। क्योंकि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान है : "जिसने किसी खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु के बारे में बताने का दावा करने वाले के पास जाकर उससे कुछ पूछा, उसकी चालीस दिन की नमाज़ ग्रहण नहीं होगी।" - इसे इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है। एक अन्य हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "जो किसी खोई हुई या चोरी की हुई वस्तु आदि के बारे में जानने का दावा करने वाले अथवा ग़ैब की बात जानने का दावा करने वाले के पास गया और उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस धर्म का इनकार किया, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया है।"

अतः तुम अनिवार्य रूप से तौबा कर लो, जो कुछ हो चुका है उसपर शर्मिंदगी का इज़हार करो, उलेमा काउंसिल के अध्यक्ष तथा न्यायालय को उक्त मौलवी तथा अपनी पुरानी पत्नी की सूचना दे दो, ताकि काउंसिल एवं न्यायालय उनके बारे में दंडात्मक कार्रवाई कर सके। साथ ही आगे यदि इस तरह की घटना पेश आए, तो शरीयत की जानकारी रखने वाले लोगों से उसका शरई इलाज जानने का प्रयास करो। अल्लाह हम सब को इस्लाम की सही समझ प्रदान करे, उसपर सुदृढ़ रखे और धर्मविरोधी चीज़ों से बचाए। निश्चय ही वह बड़ा दाता एवं दयावान है।

तुमपर सलामती, अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों।

जादूगरों तथा नज़रबंदी का करतब दिखाने वालों से कुछ पूछने के संबंध में शरई दृष्टिकोण [18]

प्रश्न : हमारे एक भाई स. अ. ब. ने रियाज़ से पूछा है : यमन के कुछ भागों में कुछ लोग हैं, जो "अस-सादह" यानी सरदार कहलाते हैं। यह लोग नज़रबंदी आदि कई इस्लाम विरोधी कार्य करते हैं। उनका दावा है कि वे लोगों की लाइलाज बीमारियों को ठीक कर सकते हैं। इसके प्रमाणस्वरूप वे अपने आप को खंजर से ज़ख़्मी कर लेते हैं और दोबारा ठीक हो जाते हैं या अपनी ज़बान काटने के बाद उसे फिर से जोड़ देते हैं। इनमें से कुछ लोग नमाज़ पढ़ते हैं और कुछ नहीं भी पढ़ते। इसी तरह, यह लोग दूसरे कुलों में अपनी शादी को तो जायज़ समझते हैं, लेकिन अपने कुल में किसी की शादी जायज़ नहीं समझते। इनसे जुड़ी हुई एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि यह लोग रोगियों के लिए दुआ करते समय अल्लाह के साथ-साथ अपने पूर्वजों को भी पुकारते हैं। पहले तो लोग उनका सम्मान करते थे, उन्हें असाधारण तथा अल्लाह के निकटवर्ती लोग मानते थे और अल्लाह वाले कहते थे। लेकिन अब उनके बारे में लोगों के मत बँटे हुए हैं। युवा और कुछ पढ़े लिखे लोग उनका विरोध करते हैं, जबकि अधिक आयु वाले तथा अज्ञान लोग आज भी उनके साथ जुड़े हुए हैं। आशा है कि हमें इस संबंध में वास्तविकता से अवगत करेंगे। उत्तर : ये और इस तरह के लोग उन सूफ़ियों में शामिल हैं, जो कई शरीयत विरोधी एवं आधारहीन कार्य करते हैं। ये उन ग़ैब की बात बताने वाले लोगों में भी शामिल हैं, जिनके बारे में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने किसी खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु के बारे में बताने का दावा करने वाले के पास जाकर उससे कुछ पूछा, उसकी चालीस दिन की नमाज़ ग्रहण नहीं होगी।" इस चेतावनी का कारण यह है कि वे ग़ैब की जानने का दावा करते हैं, जिन्नात की सेवा तथा उनकी इबादत करते हैं और जादू के द्वारा लोगों को धोखा देते हैं, जिसके बारे में अल्लाह तआला ने मूसा एवं फ़िरऔन की घटना में कहा है : "मूसा ने कहा : तुम्हीं फेंको। तो उन्होंने जब (रस्सियाँ) फेंकीं, तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन्हें भयभीत कर दिया और बहुत बड़ा जादू कर दिखाया।" अतः उक्त हदीस के कारण उनके पास जाना और उनसे कुछ पूछना जायज़ नहीं है। एक अन्य हदीस में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने किसी ग़ैब की बात बताने का दावा करने वाले के पास जाकर उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस

धर्म का इनकार किया, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया है।" जबकि एक रिवायत के शब्द हैं : "जो किसी खोई हुई या चोरी की हुई वस्तु आदि के बारे में जानने का दावा करने वाले अथवा ग़ैब की बात जानने का दावा करने वाले के पास गया और उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस धर्म का इनकार किया, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया है।"

रही बात उनके अल्लाह के अतिरिक्त अन्य लोगों को पुकारने, उनसे फ़रियाद करने और उनका यह धारणा रखने की कि उसके बाप-दादा कायनात के संचालन से संबंधित अधिकार रखते हैं, बीमारों को रोगमुक्त कर सकते हैं या फिर मर जाने अथवा अनुपस्थित रहने के बावजूद पुकारने वाले की पुकार सुन लेते हैं, तो यह सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह के प्रति अविश्वास एवं महानतम शिर्क है। अतः इस प्रकार के लोगों का खंडन किया जाना चाहिए और उनके पास जाने, उनसे कुछ पूछने तथा उनकी बात को सच मानने से बचना चाहिए। क्योंकि इनके इन कार्यों से ग़ैब की बात बताने वाले, खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु का पता बताने वाले और शिर्क करने वालों का चरित्र झलकता है, जो अल्लाह को छोड़ जिन्नों एवं ऐसे मरे हुए लोगों की पूजा करते, उनसे फ़रियाद करते और उनकी सहायता माँगते हैं, जिनसे वे अपना नाता जोड़ते हैं, जिनको अपना पूर्वज मानते हैं या फिर जिनको वली समझते हैं और जिनकी करामात का बखान करते नहीं थकते। सच्चाई यह है कि यह सारे कार्य, जादू-टोना, ग़ैब की बात बताने और खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु के बारे में सूचना देने की श्रेणी में आते हैं, जिनकी पवित्र इस्लामी शरीयत में कदापि अनुमति नहीं है।

अब जहाँ तक उनके स्वयं को खंजर से ज़ख़्मी कर लेने या अपने ज़बान काट लेने या इस तरह के अन्य खंडन योग्य कार्यों की बात है, तो यह सब नज़रबंदी का खेल हैं। दरअसल इस तरह के सारे कार्य जादू के दायरे में आते हैं, जिसे क़ुरआन की बहुत-सी आयतों और अनगिनत हीदीसों में हराम कहा गया है और सावधान किया गया है। इसलिए किसी समझदार व्यक्ति को इसके धोखे में नहीं आना चाहिए। यह तो उसी प्रकार का जादू है, जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़िरऔन के जादूगरों का ज़िक्र करते हुए कहा है :

"उनकी रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उनके जादू (के बल) से दौड़ रही हैं।"[1]इस तरह देखा जाए तो इन लोगों ने, जादू, नज़रबंदी, ग़ैब की बात बताने, खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु की सूचना देने, महानतम शिर्क, अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की सहायता लेने, उनसे फ़रियाद करने, ग़ैब की बात जानने का दावा करने और संसार के संचालन का अधिकार रखने का दावा, आदि चीज़ों को एकत्र कर लिया है। जबकि यह सारे महानतम शिर्क, स्पष्ट कुफ़्र और जादू-टोना के कार्य हैं, जिन्हें अल्लाह ने हराम घोषित किया है और फिर ग़ैब की बात को अल्लाह के अतिरिक्त कोई जानता ही नहीं। उसका फ़रमान है : "आप कह दें कि अल्लाह के सिवा आकाशों तथा धरती में रहने वाला कोई भी परोक्ष से अवगत नहीं है।"[2]अतः उनके हाल से अवगत सारे लोगों कर्तव्य है कि उनका खंडन करें, उनके गलत एवं ग़ैर-शरई कार्यों से लोगों को सावधान करें और यदि मामला किसी इस्लामी देश का हो, तो प्रशासन को उनकी गतिविधियों से अवगत कराएँ,

ताकि शरीयत की नज़र में उन्हें जो सज़ा मिलनी चाहिए, वह उन्हें दी जा सके और उनकी बुराई तथा फ़रेब से लोगों को बचाया जा सके।

अल्लाह तआ़ला ही सुयोग एवं क्षमता देने वाला है।

[1] सूरा ताहा, आयत संख्या : 66

[2] सूरा अन-नम्ल, आयत संख्या : 65

ऐसे लोक चिकित्सक से इलाज करवाना, जो जिन्नात की सेवा लेता हो

प्रश्न : हमारे यहाँ कुछ लोग लोक चिकित्सा के द्वारा इलाज करने का दावा करते हैं। जब कोई उनके पास जाता है, तो कहते हैं : हमें अपना तथा अपनी माता का नाम लिखकर दे दो और उसके बाद कल आना। जब वह दोबारा आता है, तो कहते हैं : तुम्हें अमुक-अमुक बीमारी है और तुम्हारा इलाज यह और यह है। उनमें कुछ लोगों का कहना है कि वे इलाज में अल्लाह की वाणी का प्रयोग करते हैं। इस तरह के लोगों के बारे में आपका क्या मत है और इनके पास जाना कैसा है? स. अ. ग़. हाइल।

उत्तर : चिकित्सा का यह रंग-रूप बताता है वह व्यक्ति जिन्नता की सेवा प्राप्त करता है और ग़ैब की बात जानने का दावा करता है। अतः उसके पास इलाज कराना जायज़ नहीं है। इसी तरह उसके पास जाना और उससे कुछ पूछना भी जायज़ नहीं है। क्योंकि इस श्रेणी के लोगों के बारे में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "जिसने किसी खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु के बारे में बताने का दावा करने वाले के पास जाकर उससे कुछ पूछा, उसकी चालीस दिन की नमाज़ ग्रहण नहीं होगी।" इसे इमाम मुस्लिम ने अपनी सहीह में रिवायत किया है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कई सहीह हदीसों में गैब की बात बताने वालों, खोई हुई अथवा चोरी की हुई वस्तु की सूचना देने वालों और जादूगरों के पास जाने, उनसे कुछ पूछने तथा उनकी बात को सच मानने से मना गिया गया है। एक हदीस में है : "जिसने किसी ग़ैब की बात बताने का दावा करने वाले के पास जाकर उसकी कही हुई बात को सच माना, उसने उस धर्म का इनकार किया, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारा गया है।" जिसने भी कंकड़ या कौड़ी फेंककर, धरती में लकीर खींचकर या रोगी से उसका, उसकी माता का अथवा उसके रिश्तेदारों का नाम पूछकर ग़ैब की बात जानने का दावा किया , वह उन ग़ैब की बात बताने वालों और भविष्यवाणी करने वालों में शामिल है, जिनसे कुछ पूछने और जिनकी बात को सच मानने से अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मना किया है।

अतः इस तरह के लोगों के पास जाने, उनसे कुछ पूछने और उनसे इलाज कराने से सतर्क रहना चाहिए। क्योंकि असत्यवादी लोग हमेशा फ़रेब और छल से काम लेते हैं और इस प्रकार के लोगों की बातों को सच मानने का कोई औचित्य नहीं है। साथ ही जो इस तरह के किसी व्यक्ति को जानता है, उसका कर्तव्य है कि प्रशासन जैसे, क़ाज़ियों, अधिकारियों और विभिन्न सराकारी निकायों के केंद्रों को उनसे सूचित कर दें, ताकि उनपर विधिसम्मत कार्रवाई की जा सके और मुसलमानों को उनके फ़ितने से बचाया जा सके।

हम अल्लाह की सहायता माँगते हैं और सच्चाई यह है कि अल्लाह की सहायता के बिना इनसान के पास न अच्छा कार्य करने की क्षमता है और न बुरे काम से बचने की क्षमता।

जादू का शरई इलाज [22]

प्रश्न : मैंने एक आलिम को कहते सुना है कि जिसे लगता हो कि उसपर जादू कर दिया गया है, वह चार बेरी के पत्ते ले और उन्हें एक बरतन में रखकर उनपर सूरा अल-इख़लास, सूरा अल-फ़लक़, सूरा अन-नास, आयत अल-कुरसी, सूरा अल-काफ़िरून,[1] {وما أنزل على الملكين ببابل هاروت وماروت} वाली आयत और सूरा फ़ातिहा पढ़े। यह बात कितनी सही है और जिस व्यक्ति पर जादू कर दिया जाए, उसे क्या करना चाहिए? आशा है कि हमें उत्तर प्रदान करेंगे। अल्लाह आपको सुरक्षित रखे।

उत्तर : इसमें कोई संदेह नहीं है कि जादू एक वास्तविक वस्तु है। यह और बात है कि यह कभी इनसान को भ्रम में डालता और कभी-कभी सचमुच घटित होता है तथा सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह की अनुमति से प्रभाव छोड़ता है। जादूगरों के बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है : "तथा सुलैमान के राज्य में शैतान जो मिथ्या बातें बना रहे थे, उनका अनुसरण करने लगे। जबकि सुलैमान ने कभी कुफ़्र (जादू) नहीं किया, परन्तु कुफ़्र तो शैतानों ने किया, जो लोगों को जादू सिखा रहे थे तथा वे उन बातों का (अनुसरण करने लगे) जो बाबिल (नगर) के दो फ़रिश्तों; हारूत और मारूत पर उतारी गयीं, जबकि वे यानी दोनों फ़रिश्ते किसी को जादू नहीं सिखाते, जब तक ये न कह देते कि हम केवल एक परीक्षा हैं, अतः, तू कुफ़्र में न पड़। फिर भी वे उन दोनों से वो चीज़ सीखते, जिसके द्वारा वे पति और पत्नी के बीच जुदाई डाल दें और वे अल्लाह की अनुमति बिना इसके द्वारा किसी को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते थे।"[2]अतः जादू का प्रभाव तो पड़ता है, लेकिन वह अल्लाह की प्राकृतिक अनुमति से पड़ता है। क्योंकि इस संसार में जो भी घटना घटती है और जो भी वस्तु अस्तित्व में आती है, वह अल्लाह की अनुमति से उसके निर्णय के अनुसार होती है। फिर, जादू का इलाज तथा दवा भी मौजूद है। स्वयं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जादू किया गया, ते अल्लाह ने आपको उससे मुक्ति प्रदान की। सहाबा ने जादू की हुई चीज़ों को ढूँढ निकाला और नष्ट कर दिया, तो अल्लाह ने अपने नबी को उसके

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या :102

[2] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या :102

प्रभाव से बाहर निकाल दिया। अतः, जब जादू की हुई चीज़ों, जैसे गिरह लगाए हुए धागों तथा परस्पर जुड़ी हुई कीलों आदि को प्राप्त कर लिया जाए, तो उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा। क्योंकि जादूगर अपने गलत उद्देश्यों की पूर्ति के लिए फूँक मारकर गिरह लगाने आदि का कार्य करते हैं। उसके बाद कभी तो अल्लाह की अनुमति से उनका उद्देश्य पूरा हो जाता है और कभी नहीं भी होता है। क्योंकि हमारा पवित्र एवं उच्च पालनहार हर काम करने का सामर्थ्य रखता है। जादू का इलाज कभी-कभी क़ुरआन की विशेश सूरों एवं आयतों को पढ़कर भी किया जाता है। चाहे पढ़ने का कार्य जादू से प्रभावित व्यक्ति स्वयं करे, यदि वह होश व हसाव में हो, या फिर कोई दूसरा व्यक्ति पढ़कर उसके सीने और शरीर के किसी अन्य अंग में दम करे। इस अवसर पर सूरा फ़ातिहा, आयत अल-कुरसी, सूरा अल-इख़लास, सूरा अल-फ़लक़ और सूरा अन-नास के साथ-साथ सूरा अल-आराफ़, सूरा यूनुस और सूरा ताहा की वह आयतें पढ़ी जाएँगी, जिनका संबंध जादू से है। सूरा अल-आराफ़ की आयतें कुछ इस तरह हैं : "तो हमने मूसा को वह्य की कि अपनी लाठी फेंको और वह अकस्मात् झूठे इन्द्रजाल को निगलने लगी। अतः सत्य सिद्ध हो गया और उनका बनाया मंत्र-तंत्र व्यर्थ होकर रह गया। अंततः वे प्राजित कर दिए गए और तुच्छ तथा अपमानित होकर रह गए।"[1]सूरा यूनुस की यह आयतें इस तरह हैं : "और फ़िरऔन ने कहा : (देश में) जितने दक्ष जादूगर हैं, उन्हें मेरे पास लाओ। और जब उन्होंने फेंक दिया, तो मूसा नो कहा : तुम जो कुछ लाये हो, वह जादू है। निश्चय अल्लाह उसे अभिव्यर्थ कर देगा। वास्तव में, अल्लाह उपद्रवकारियों के कर्म को नहीं सुधारता। और अल्लाह सत्य को, अपने आदेशों के अनुसार, सत्य कर दिखाएगा। यद्यपि अपराधियों को बुरा लगे।"[2]तथा सूरा ताहा की यह आयतें इस तरह हैं : "उन्होंने कहा : हे मूसा! तू फेंकता है या पहले हम फेंकें? मूसा ने कहा : बल्कि तुम्हीं फेंको। फिर उनकी रस्सियाँ तथा लाठियाँ उसे लग रही थीं कि उनके जादू (के बल) से दौड़ रही हैं। इससे मूसा अपने मन में डर गया। हमने कहाः डर मत, तू ही ऊपर रहेगा। और फेंक दे, जो तेरे दायें हाथ में है, वह निगल जाएगा, जो कुछ उन्होंने बनाया है। वह केवल जादू का स्वाँग बनाकर लाए हैं तथा जादूगर सफल नहीं होता, जहाँ से

[1] सूरा अल-आराफ़, आयत संख्या : 117-119

[2] सूरा यूनुस, आयत संख्या : 79-82

आए।"[1]इसी तरह सूरा "क़ुल या अय्युहल्काफ़िरून", सूरा "क़ुलहुवल्लाहु अहद", "क़ुल अऊज़ु रब्बिल फ़लक़" और "क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास " पढ़े। बेहतर यह है कि सूरा अल-इख़लास, सूरा अल-फ़लक़ और सूरा अन-नास को तीन बार पढ़े और यह दुआ पढ़े : "ऐ अल्लाह, लोगों के पालनहार! कष्ट दूर कर दे तथा रोग से मुक्ति प्रदान कर। तू ही रोग से मुक्ति प्रदान करता है। तेरे सिवा कोई रोग से मुक्ति प्रदान करने वाला नहीं है। रोग से ऐसा छुटकारा प्रदान कर कि फिर कोई रोग शेष न रहे।" इस दुआ को तीन बार कहे। इसी तरह उसपर यह दुआ पढ़े: "अल्लाह का नाम लेकर मैं तुहारे लिए पनाह मांगता हूँ हर कष्टदायक वस्तु से, हर प्राणी की बुराई अथवा ईर्ष्यालु आँख से।अल्लाह तुम्हें रोग से मुक्ति प्रदान करे। अल्लाह का नाम लेकर मैं तुमपर पढ़ता हूँ।" इस दुआ को तीन बार पढ़े तथा स्वास्थ्य लाभ एवं सुरक्षा की दुआ करे। यदि इस दुआ को भी तीन बार पढ़ ले : "मैं तुझे अल्लाह के संपूर्ण शब्दों की शरण में देता हूँ उसकी सृष्टियों की बुराई से।" तो उति उत्तम।

यह सब लाभकारी दुआएँ हैं। यदि इन आयतों तथा इस दुआ को पानी में पढ़कर उसका कुछ भाग पी ले और शेष से स्नान कर ले, तो इससे अल्लाह की अनुमति से स्वाथ्य लाभ होगा। यदि पानी में बेरी के सात हरे पत्तों को कूटने के बाद डाल दे, तो इससे भी फ़ायदा होगा। इसे बहुतों बार आज़माया गया है और अल्लाह की अनुमति से इससे फ़ायदा हुआ है। हमने बहुत-से लोगों को ऐसा करने को कहा और अल्लाह ने उन्हें इससे फ़ायदा पहुँचाया। यह इलाज उस व्यक्ति के लिए भी लाभकारी है, जो जादू के कुप्रभाव के कारण अपनी पत्नी से संभोग की शक्ति खो चुका हो। कई बार कुछ लोगों पर जादू का इतना बुरा असर पड़ता है कि वे पत्नी से संभोग की शक्ति ही नहीं रखते। इस प्रकार के लोग जब इस तरह का इलाज कराते हैं तो अल्लाह की अनुमति से फ़ायदा होता है। चाहे पीड़ित व्यक्ति स्वयं अपने ऊपर इन्हें पढ़े या कोई दूसरा पढ़े या फिर इन्हें पानी में पढ़कर उसका कुछ भाग पी ले और शेष से स्नान करे। हर तरह से जादू किए हुए व्यक्ति तथा पत्नी के संभोग से अक्षम कर दिए गए व्यक्ति को लाभ होता है। स्मरण रहे कि यह केवल साधान हैं और स्वास्थ्य केवल पवित्र एवं महान अल्लाह ही प्रदान करता है, जो हर काम करने की शक्ति रखता है। उसी हाथ में दवा भी है उसी के हाथ में बीमारी भी है। जो भी होता है उसके इरादे से और

[1] सूरा ताहा, आयत संख्या : 65-69

उसके निर्णय के अनुसार होता है। एक सहीह हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह ने जितने भी रोग उतारे हैं, उनकी दवा भी उतारी है। यह और बात है कि कसी को मालूम हो गई और किसी को मालूम न हो सकी।"

यह दरअसल पवित्र एवं महान अल्लाह का अनुग्रह तथा उसकी कृपा है। वही सुयोग प्रदान करता है और वही सीधा मार्ग दिखाता है।

इनसान के अंदर जिन्न के प्रवेश करने तथा इसका इनकार करने वाले के खंडन में दोटूक बातें [28]

सारी प्रशंसा अल्लाह की है तथा दरूद एवं सलाम हो अल्लाह के रसूल, उनके परिजनों, साथियों और उनके मार्ग पर चलने वालों पर।

कुछ स्थानीय तथा गैर-स्थानीय समाचार पत्रों ने इस साल यानी सन 1407 हिजरी के शाबान महीने में मेरे सामने एक जिन्न के, जो रियाज़ में रहने वाली एक मुस्लिम स्त्री के शरीर में प्रवेश कर चुका था, इस्लाम धर्म ग्रहण करने के एलान की ख़बर को संक्षिप्त एवं विस्तृत रूप में प्रकाशित किया। दरअसल इससे पहले ही, जब रियाज़ में रहने वाले हमारे एक भाई अब्दुल्लाह बिन मुश्रिफ़ अल-उमरी ने जिन्न से प्रभावित स्त्री पर क़ुरआन की कुछ आयतें पढ़ीं, उस जिन्न से बात की, उसे अल्लाह का वास्ता देकर समझाया, उसे बताया कि अत्याचार हराम एवं बहुत बड़ा पाप है, तथा जब उस जिन्न ने बताया कि वह ग़ैरमुस्लिम एवं बौद्ध है, तो उसे इस्लाम ग्रहण करने का आह्वान किया और उस स्त्री का शरीर त्याग देने को कहा, तो वह इस आह्वान से संतुष्ट हो गया था और अब्दुल्लाह के समाने इस्लाम ग्रहण करने का एलान कर दिया था। उसके बाद हमारे भाई अब्दुल्लाह तथा उस स्त्री के अभिभावकों की इच्छा हुई कि उस स्त्री को लेकर मेरे पास उपस्थित हों, ताकि मैं भी उस जिन्न के इस्लाम ग्रहण करने का एलान सुन लूँ। चुनांचे जब वे मेरे पास आए और मैंने उससे उस स्त्री के शरीर में प्रवेश करने का कारण पूछा, तो उसने कारण बताए। वह बात तो उस स्त्री की ज़बान से कर रहा था, लेकिन बात स्त्री की नहीं, बल्कि पुरुष की थी। वह स्त्री मेरे पास रखी एक कुर्सी में बैठी हुई थी और उसका भाई, उसकी बहन, अब्दुल्लाह बिन मुश्रिफ़ और कुछ अन्य उलेमा सब कुछ देख रहे थे तथा जिन्न की बात सुन रहे थे। उसने स्पष्ट रूप से इस्लाम ग्रहण करने की घोषणा की और बताया कि वह बुद्ध धर्म का अनुयायी एवं भारतीय है। मैंने उसे समझाया, अल्लाह का भय रखने को कहा, उक्त स्त्री का शरीर त्याग देने का आह्वान किया और उसपर अत्याचार करने से बाज़ रहने को कहा, तो उसने मेरी इन बातों को मान लिया और बताया कि मैं इस्लाम धर्म से संतुष्ट हो गया हूँ। अब, जब अल्लाह ने उसे हिदायत दे दी, तो मैंने उसे अपनी जाति को इस्लाम की ओर बुलाने को कहा, तो इसका उसने वादा किया और उक्त स्त्री का शरीर त्याग दिया। इस अवसर पर, अंतिम शब्द जो

उसकी ज़बान से निकले, वह थे, अस-सलामु अलैकुम। फिर उस स्त्री ने अपनी साधारण भाषा में बात करना शुरू कर दिया तथा उसने जिन्न के बोझ से राहत महसूस किया। एक महीना या उससे कुछ अधिक समय बीतने के बाद वह स्त्री अपने दो भाइयों, मामा और बहन के साथ मेरे पास आई और मुझे बताया कि अब वह सकुशल तथा स्वस्थ है और वह जिन्न दोबारा वापस नहीं आया है। मैंने उससे पूछा कि वह उस जिन्न के शरीर के अंदर रहते समय क्या कुछ महसूस कर रही थी, तो उसने बताया कि उन दिनों उसके मन में शरीयत विरोधी घटिया विचार आते थे और वह बुद्ध धर्म की तथा उसके बारे में लिखी गई किताबों की ओर आकर्षण महसूस करती थी। जबकि उससे मुक्ति मिलने के बाद मन में इस तरह के विचार आने का सिलसिला बंद हो गया और पहले की तरह वह इन घटिया विचारों से सुरक्षित जीवन जीने लगी। मुझे पता चला कि शैख़ अली अत-तनतावी ने इस प्रकार की घटना के घटित होने की संभावना से इनकार किया है और बताया है कि यह असत्य एवं झूठ है तथा संभव है कि इस तरह की बात उस स्त्री के साथ रिकार्ड की गई हो और यह बातें उसने न कही हों। मैंने वह कैसेट मँगवाई, जिसमें शैख़ अली अत-तनतावी की यह बात रिकार्ड है, तो उनकी कही हुई बात से अवगत होने के बाद मुझे उनके इस विचार पर बड़ा आश्चर्य हुआ कि हो सकता है कि यह उस स्त्री के साथ रिकार्ड की हुई बात हो। हालाँकि मैंने उस जिन्न से कई प्रश्न किए थे और उसने मेरे हर प्रश्न का उत्तर दिया था। दरअसल यह एक बदतरीन ग़लत बयानी और निराधार आरोप है। उन्होंने आगे यह भी कहा है कि किसी इनसान के हाथ पर किसी जिन्न का इस्लाम ग्रहण करना सुलैमान अलैहिस्सलाम के संदर्भ में आए हुए अल्लाह के इस कथन के विरुद्ध है : "तथा मुझे ऐसा राज्य प्रदान कर, जो मेरे पश्चात किसी और के लिए उचित न हो।"[1]दरअसल यह भी उनकी ओर से ग़लत बयानी और निराधार विश्लेषण है। इनसान के हाथ में जिन्न के इस्लाम ग्रहण करने के अंदर कोई ऐसी नहीं है, जो सुलैमान अलैहिस्सलाम की उक्त दुआ के विरुद्ध हो। जिन्नों की एक बहुत बड़ी संख्या ने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ पर इस्लाम ग्रहण किया था।

[1] सूरा साद, आयत संख्या : 35

अल्लाह ने सूरा अल-अहक़ाफ़ तथा सूरा अल-जिन्न में इसे स्पष्ट रूप से बयान किया है। जबकि सहीह बुख़ारी एवं सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित एक हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "शैतान मेरे सामने आया और मेरी नमाज़ को नष्ट करने के लिए मुझपर आक्रमण कर दिया। लेकिन अल्लाह ने मुझे उसपर हावी कर दिया और मैंने उसकी गरदन पकड़कर दबा दिया। मेरा तो इरादा बन गया था कि उसे मस्जिद के किसी खंभे से बाँध दूँ, ताकि जब तुम सुबह को मस्जिद आओ, तो उसे देख सको। लेकिन मुझे अपने भाई सुलैमान अलैहिस्सालम का यह कथन याद आ गया : "हे मेरे रब! मुझे क्षमा कर तथा मुझे ऐसा राज्य प्रदान कर, जो मेरे पश्चात किसी और के लिए उचित न हो।"[1]तो अल्लाह ने उसे नामुराद वापस कर दिया।" यह सहीह बुख़ारी के शब्द हैं। जबकि सहीह मुस्लिम के शब्द कुछ इस प्रकार हैं : "पिछली रात एक विशालकाय जिन्न मेरी नमाज़ नष्ट करने के लिए मेरे सामने आने लगा। लेकिन अल्लाह ने मुझे उसपर हावी कर दिया और मैंने उसकी गरदन पकड़कर दबा दिया। मेरा तो इराद बन गया था कि उसे मस्जिद के किसी खंभे से बाँध दूँ, ताकि तुम सबुह को मस्जिद आओ तो सब लोग उसे देख सको, लेकिन मुझे अपने भाई सुलैमान की यह दुआ याद आ गई : "हे मेरे रब! मुझे क्षमा कर तथा मुझे ऐसा राज्य प्रदान कर, जो मेरे पश्चात किसी और के लिए उचित न हो।"[2]अंततः, अल्लाह ने उसे नामुराद वापस कर दिया।" जबकि नसई ने आइशा रज़ियल्लाहु अनहा से बुख़ारी की शर्त पर रिवायत किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे कि शैतान आ गया। आपने उसे पकड़कर पछाड़ दिया और गला घोंट दिया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "यहाँ तक मैंने अपने हाथ में उसकी ज़बान की ठंडक महसूस की। यदि मेरे भाई सुलैमान की दुआ न होती, तो वह बँधा रहता और लोग उसे देख पाते।" जबकि अहमद एवं अबू दाऊद ने इसका वर्णन अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अनहु से किया है, जिसमें है : "मैंने अपना हाथ बढ़ाया और उसका गला दबाता चला गया, यहाँ तक कि अपनी दो उंगलियों, अंगूठे तथा उसके पास वाली उँगली के बीच उसकी राल की ठंडक महसूस की।" जबकि

[1] सूरा साद, आयत संख्या : 35

[2] सूरा साद, आयत संख्या : 35

इमाम बुख़ारी ने अपनी सहीह 4/487 में अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु से बिना सनद के रिवायत किया है, वह कहते हैं : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे सदक़ा-ए-फ़ित्र के अनाज की सुरक्षा का आदेश दिया। इसी बीच मेरे पास एक आदमी आया और लप भर-भरकर अनाज लेने लगा। मैंने उसे पकड़ लिया और कहा : अल्लाह की क़सम! मैं तुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले जाऊँगा। उसने कहा : मुझे छोड़ दो, क्योंकि मोहताज हूँ और मुझपर मेरे बच्चों का बोझ होने के कारण अत्यधिक ज़रूरतमन्द हूँ। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अनहु कहते हैं कि मैंने उसे छोड़ दिया। सुबह को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : अबू हुरैरा! पिछली रात तेरे क़ैदी ने क्या किया? मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! जब उसने अत्यधिक मजबूरी बयान की और अपने बाल बच्चों का ज़िक्र किया, तो मैंने तरस खाकर उसे छोड़ दिया। आपने फरमाया : उसने तुझसे झूठ बोला है। वह फिर आएगा। लिहाज़ा मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फरमान के मद्देनज़र कि वह फिर आएगा, उसकी प्रतीक्षा करता रहा। चुनांचे वह फिर आया और लप भर-भरकर गल्ला लेने लगा। मैंने उसे पकड़कर कहा : अब मैं तुझे ज़रूर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले जाऊँगा। वह कहने लगा : मुझे छोड़ दो, मैं मोहताज हूँ। मुझपर मेरे बच्चों का बड़ा बोझ है। मैं फिर न आऊँगा। अब के भी मैंने उसपर तरस खाया और छोड़ दिया। सुबह को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर पूछा : अबू हुरैरा! तुम्हारे क़ैदी ने क्या किया? मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! जब उसने सख़्त ज़रूरत पेश की और बच्चों का ज़िक्र किया तो मैंने उसपर रहम करते हुए छोड़ दिया। आपने फिर फ़रमाया कि उसने तुमसे झूठ बोला है। वह फिर आएगा। चुनांचे मैं तीसरी बार उसका इन्तेज़ार करने लगा। चुनांचे वह फिर आया और गल्ले से लप भरने लगा। मैंने उसे पकड़कर कहा कि मैं अब तुझे ज़रूर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले जाऊँगा। यह तीसरी बार है। तू हर बार कह देता है कि अब न आऊँगा और फिर आ जाता है। इसपर उसने कहा : मुझे छोड़ दो। मैं तुम्हें कुछ ऐसे शब्द बताता हूँ, जो तुम्हारे लिए फायदेमन्द होंगे। मैंने कहा : वह क्या हैं? उसने कहा : जब तुम सोने के लिए अपने बिस्तर पर जाओ तो आयत अल-कुरसी यानी "अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल- हय्युल -क़य्यूम"[1] आख़िर तक पढ़ लो। ऐसा करने से

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 255

अल्लाह की ओर से तुम्हारी सुरक्षा पर एक फ़रिश्ता नियुक्त हो जाएगा और सुबह तक कोई शैतान तुम्हारे पास न आ सकेगा। मैंने फिर उसे छोड़ दिया। सुबह को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा : तुम्हारे क़ैदी ने पिछली रात क्या किया? मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! उसने कहा कि मैं तुम्हें कुछ शब्द सिखा देता हूँ, जिनसे अल्लाह तआला तुम्हें फायदा देगा, तो मैंने उसे छोड़ दिया। आपने फरमाया : वह शब्द क्या हैं? मैंने कहा : उसने मुझसे कहा कि जब अपने बिछौने पर जाओ तो आयत अत-कुरसी शुरू से आख़िर तक पढ़ लिया करो। अल्लाह की ओर से तुम्हारी सुरक्षा पर एक फ़रिश्ता नियुक्त हो जाएगा और सुबह तक शैतान तुम्हारे पास नहीं आ सकेगा। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अनहुम तो नेकी के लालची थे ही। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : उसने इस बार तुमसे सच कहा है, यद्पि वह है बड़ा झूठा। अबू हुरैरा! तुम जानते हो कि तीन रात से किससे बात कर रहे हो? मैंने कहा कि नहीं। आपने फ़रमाया : वह शैतान था।

एक सहीह हदीस, जिसे इमाम बुख़ारी तथा इमाम मुस्लिम ने सफ़िय्या रज़ियल्लाहु अनहा से रिवायत किया है, उसमें है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "शैतान आदम की संतान के शरीर में रक्त दौड़ने के स्थानों में दौड़ता है।" इमाम अहमद ने अपनी मुसनद 4/216 में सहीह सनद से रिवायत किया है कि उसमान बिन अबुल आस रज़ियल्लाहु अनहु ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! शैतान मेरे, मेरी नमाज़ और मेरी क़िरात के बीच रुकावट बन जाता है। तो आपने फ़रमाया : "वह ख़िनज़िब नामी एक शैतान है। जब तुम्हें उसका आभास हो, तो उससे अल्लाह की शरण माँगों।" वह कहते हैं : मैंने इसपर अमल किया, तो सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह ने मेरी यह परेशानी दूर कर दी। इसी तरह सहीह हदीसों में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है कि हर इनसान के साथ एक फ़रिश्ता और एक शैतान साथी के रूप में लगा रहता है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी इससे अछूते नहीं थे। यह और बात है कि अल्लाह ने आपको अपने साथ रहने वाले शैतान पर इतना हावी कर दिया था कि वह आज्ञाकारी बन गया था और आपको केवल अच्छी बता ही करने को कहता था। सर्वशक्तिमान एवं महान अल्लाह की किताब, उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत और इस उम्मत के मतैक्य से इस बात की सिद्धि हो चुकी है कि जिन्न इनसान के अंदर प्रवेश करता है और

उसपर अपना प्रभाव छोड़ता है। ऐसे में किसी ज्ञानवान व्यक्ति के लिए बिना किसी प्रमाण के, केवल कुछ अह्ल-ए-सुन्नत व जमात विरोधी बिदअतियों के पद्चिह्नों का अनुसरण करते हुए इसका इनकार करना जायज़ नहीं है। इस संबंध में हम अल्लाह ही से मदद माँगते हैं और सच्ची बात यह है कि उसकी मदद के बिना न इनसान के अंदर कुछ अच्छा करने की शक्ति है और न बुराई से बचने की क्षमता। अब मैं पाठकों के लिए जहाँ तक हो सके, इस संबंध में कुछ उलेमा के कथन नक़ल कर रहा हूँ। अल्लाह के निम्नलिखित कथन की व्याख्या में क़ुरआन व्याख्याकारों के मत "जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो।"[1]

अबू जाफ़ार बिन जरीर तबरी ने अल्लाह तआला के इस फ़रमान की व्याख्या करते हुए कहा है : "जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो।"[2]"यानी शैतान दुनिया में उसके विवेक को नष्ट कर देता है। वही उसका गला घोंटकर उसे गिरा देता है। इसमें आए हुए शब्द {من المس} का अर्थ है, जुनून से।"

बग़वी ने उक्त आयत की तफ़सीर में कहा है : "जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो।"[3]"{المس} यानी जुनून। कहा जाता है : "مس الرجل فهو ممسوس" यानी अमुक व्यक्ति मजनून हो गया।"

जबकि इमाम इब्न-ए-कसीर ने उक्त आयत की तफ़सीर में कहा है : "जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो।"[4]"यानी वे क़यामत के दिन अपनी क़ब्रों से उसी तरह खड़े होंगे, जिस तरह एक पछाड़ दिया गया व्यक्ति इस अवस्था में खड़ा होता है तथा शैतान के उनमत्त कर दिए जाने के बाद खड़ा होता है। इसका अर्थ यह है कि वह कुछ अपरिचित अंदाज़ में खड़ा होगा। अब्दुल्लाह बिन अब्बास

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या :275

[2] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या :275

[3] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 275

[4] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या :275

रज़ियल्लाहु अनहु कहते हैं : "सूद खाने वाला क़यामत के दिन इस तरह मजनून बनाकर उठाया जाएगा कि अपना ही गला घोंट रहा होगा।" इसे इब्न-ए-अबू हातिम ने रिवायत किया है उसके बाद कहा है :

इसे औफ़ बिन मालिक, सईद बिन जुबैर, सुद्दी, रबी बिन अनस, क़तादा और मुक़ातिल बिन हय्यान आदि से भी नक़ल किया गया है।"

इसी तरह क़ुरतुबी ने अपनी तफ़सीर में इस आयत की व्याख्या करते हुए कहा है : "जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो।"[1]इस आयत से मालूम होता है उन लोगों की बात ग़लत है, जो किसी पर जिन्नात के द्वारा किए आक्रमण का इनकार करते हैं और यह समझते हैं ऐसा मानव प्रकृति में विकार के कारण होता है, शैतान न तो इनसान की रगों में दौड़ता है और न उसपर उसका कोई असर होता है।" इस संबंध क़ुरआन के व्याख्याकारों ने बहुत कुछ कहा है। जो उससे अवगत होना चाहे, जान सकता है।

शैख़ुल इस्लाम इब्न-ए-तैमिया ने अपनी किताब "ईज़ाह अद-दलालह फ़ी उमूम अर-रिसालह लि-अस-सक़लैन" में, जो मजमू अल-फ़तावा 19/9-65 में मौजूद है, कहा है : "यही कारण है कि मोतज़िला के एक समूह जैसे अबू अली जुब्बाई और अबू बक्र राज़ी आदि ने इनसान के शरीर में जिन्न के प्रवेश करने की बात का इनकार किया है। हालाँकि वे जिन्नात के वजूद का इनकार नहीं करते। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों में जिन्नता के इनसान के शरीर में प्रवेश करने की बात उतनी स्पष्ट नहीं है, जितनी कि उनके वजूद की बात स्पष्ट है। हालाँकि उनकी यह धारणा गलत है। यही कारण है कि अशअरी ने "मक़ालात अह्ल अस-सुन्नह व अल-जमाअह" में बताया है कि साधारण मोतज़िला कहते हैं कि जिन्न इनसान के शरीर में दाख़िल होता है, जिसका उल्लेख अल्लाह तआला के इस फ़रमान में है : "जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो।"[2]जबकि अब्दुल्लाह बिन इमाम अहमद बिन

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या :275

[2] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 275

हंबल कहते हैं कि मैंने अपने पिता से कहा : कुछ लोग कहते हैं कि जिन्न इनसान के शरीर में प्रवेश नहीं करता। तो उन्होंने कहा : ऐ मेरे बेटे! यह लोग झूठ बोलते हैं। वह इनसान की ज़बान से बात करता है। यह बात अपने स्थान पर विस्तृत रूप से लिखी जा चुकी है। शैख़ुल इस्लाम इब्न-ए-तैमिया अपने फ़तावा 24/276-277 में भी कहते हैं : "जिन्नात का वजूद अल्लाह की किताब, उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत और इस उम्मत के सदाचारी पूर्वजों तथा इमामों के मतैक्य से साबित है। इसी तरह जिन्न के इनसान के शरीर में प्रवेश करने की बात भी अह्ल-ए-सुन्नत व जमाअत के मतैक्य से साबित है। अल्लाह तआला का फ़रमान है : "जो लोग ब्याज खाते हैं, ऐसे उठेंगे जैसे वह उठता है, जिसे शैतान ने छूकर उनमत्त कर दिया हो।"[1]जबकि एक सहीह हदीस में है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है : "शैतान आदम की संतान के शरीर में रक्त दौड़ने के स्थानों में दौड़ता है।"

अब्दुल्लाह बिन इमाम अहमद का कहना है : मैंने अपने पिता से कहा कि कुछ लोग कहते हैं कि जिन्न इनसान के शरीर में प्रवेश नहीं करता, तो उन्होंने कहा : ऐ मेरे बेटे! वे झूठ बोलते हैं। जिन्न इनसान के मुँह से बात भी करता है। उनकी कही हुई यह बात एक विख्यात तथ्य है। क्योंकि कभी-कभी इनसान पर दौरा पड़ता है और इस अवस्था में वह ऐसी बात बोलता है, जिसका अर्थ समझ में नहीं आता। कभी-कभी उसे इतना पीटा जाता है कि यदि ऊँट को भी उतना पीटा जाए, तो उसकी हालत पतली हो जाए। लेकिन उसे पिटाई का एहसास नहीं होता तथा जो कुछ कहता है, उसका भी एहसास नहीं होता।

कभी-कभी ऐसा व्यक्ति जिसपर जिन्न सवार हो, एक सामान्य व्यक्ति को कुछ इस तरह खींचता है, जिस दरी पर बैठा होता है उसे इस तरह खींचता है, विभिन्न यंत्रों को इस तरह एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाता है तथा इस प्रकार के अन्य काम कुछ इस तरह करता है कि देखने वाले को यक़ीन हो जाता कि इस व्यक्ति के मुँह से बोलने वाला और इन वस्तुओं को स्थानांतरित करने वाला इनसान नहीं कोई और है।

[1] सूरा अल-बक़रा, आयत संख्या : 275

फिर, यह बात भी है कि किसी भी मुस्लिम इमाम ने इनसान के शरीर में जिन्न के प्रवेश करने का इनकार नहीं किया है। अतः, जिसने इसका इनकार किया और यह दावा किया कि शरीयत इस तरह की धारणा को झुठलाती है, उसने शरीयत पर मिथ्या आरोप लगाया। किसी भी शरई प्रमाण से इसकी असिद्धि नहीं होती है।

इमाम इब्न अल-क़य्यिम ने अपनी किताब "ज़ाद अल-मआद फ़ी हद्य ख़ैर अल-इबाद" 4/66-69 में कहा है : "मानसिक विकार के दो प्रकार हैं। दुष्ट पार्थिव आत्माओं के कारण उत्पन्न होने वाला मानसिक विकार और घटिया शारीरिक मिश्रणों के कारण होने वाला मानसिक विकार। दूसरे प्रकार का विकार ही वह विकार है, जिसके कारणों एवं इलाज के बारे में चिकित्सक लोग बात करते हैं।

जहाँ तक दुष्ट पार्थिव आत्माओं के कारण होने वाले मानसिक विकार की बात है, तो अग्रणीय एवं विवेकी चिकित्सकगण उसे स्वीकार करते और यह मानते हैं कि उसके इलाज का तरीक़ा दुष्ट आत्माओं का मुक़ाबला शिष्ट तथा सभ्य आकाशीय आत्माओं के ज़रिए करना है, जो उनके प्रभावों को रोकने तथा उनके कार्यों को व्यर्थ करने का काम करेंगी। इसे बुकरात ने अपनी एक किताब में स्पष्ट रूप से बयान किया है और मानसिक विकार के कुछ इलाज का ज़िक्र करते हुए कहा है :

यह उपचार उस समय लाभकारी है, जब उसका कारण शारीरिक मिश्रण एवं भौतिक संरचना हो। जो मानसिक विकार आत्माओं के कारण उसमें यह उपचार लाभकारी नहीं है।

लेकिन अज्ञान, महत्वहीन एवं तुच्छ तथा अधर्मिता को गौरव का विषय जानने वाले चिकित्सक, आत्माओं के कारण मानसिक विकार उत्पन्न होने का इनकार करते हैं तथा आत्माओं के मानव शरीर में होने वाले प्रभाव को नहीं मानते। हालाँकि उनके पास उनकी अज्ञानता के अतिरिक्त कोई प्रमाण नहीं है, चिकित्सा विज्ञान हरगिज़ इसका विरोध नहीं करता, अनुभव तथा वस्तुस्थिति इसकी गवाही देती है और उनका विकार का कारण कुछ मिश्रणों की बहुलता को बताना कुछ प्रकारों में सही है, सारे प्रकारों में नहीं।" वह आगे कहते हैं : "नास्तिक चिकित्सकगण आए, जिन्होंने केवल शारीरिक मिश्रणों के कारण होने वाले मानसिक विकार को माना। जबकि हर विवेकी एवं इन आत्माओं इनके प्रभाव का ज्ञान रखने वाला व्यक्ति इनकी अज्ञानता एवं विवेकहीनता पर हँसेगा। इस प्रकार के मानसिका

विकार का इलाज दो प्रकार से किया जा सकता है। एक मानसिक विकार के शिकार व्यक्ति की ओर से और दूसरा चिकित्सक की ओर से। मानसिक विकार के शिकार व्यक्ति की ओर से इलाज उसकी आत्मशक्ति, इन आत्माओं के रचयिता की ओर सच्ची एकाग्रता और अल्लाह की ऐसी सच्ची शरण लेने द्वारा हो सकती है, जिसमें दिल एवं ज़बान दोनों का मेल हो। यह एक तरह का युद्ध है और युद्ध में शत्रु से हथियार द्वारा बराबरी का मुक़ाबला करने के लिए ज़रूरी है कि योद्धा के अंदर दो बातें पाई जाएँ। एक यह कि उसके पास हथियार उचित एवं उत्कृष्ट हो और दूसरा यह कि उसके बाज़ू मज़बूत हों। दोनों में एक बात भी न हो, तो हथियार कुछ अधिक लाभ नहीं देता। ऐसे में भला उस परिस्थिति के बारे में क्या कहा जा सकता है, जब दोनों में से कोई भी बात मौजूद न हो?

हृदय एकेश्वरवाद, अल्लाह पर भरोसा, उसके भय और उसके प्रति निष्ठा से खाली हो और उसके पास हथियार भी न हो।

दूसरा इलाज चिकित्सक द्वारा होता है। फिर चिकित्सक के अंदर भी इन दो बातों का पाया जाना ज़रूरी है। यही कारण है कि कुछ चिकित्सकों का केवल "इसके शरीर से निकल जा", "बिस्मिल्लाह" अथवा "ला हौला व ला क़ुव्वता इल्लाह बिल्लाह" कह देना ही पर्याप्त हुआ करता है। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहा करते थे : "निकल जा ऐ अल्लाह के दुश्मन! मैं अल्लाह का रसूल हूँ।" मैंने अपने गुरू शैख़ अल-इस्लाम इब्न-ए-तैमिया को देखा है कि वह किसी को मानसिक विकार के शिकार व्यक्ति के पास भेजते, जो उसे संबोधित करते हुए कहता : "शैख़ ने तुझसे कहा है कि तू इसके शरीर से निकल जा। क्योंकि तेरा इसके शरीर में रहना हलाल नहीं है।" बस इतने भर से रोगी को आराम मिल जाता। कभी-कभी स्वयं उससे बात भी करते थे। यदि आत्मा ज़िद्दी होती, तो पिटाई कर निकालते, जिसके बाद रोगी ठीक हो जाता तथा उसे किसी कष्ट की अनुभूति नहीं होती थी।" हमने उन्हें बहुत बार ऐसा करते देखा है। वह आगे कहते हैं : "सारांश यह कि इस प्रकार के मानसिक विकार तथा उसके इलाज का इनकार केवल ऐसे लोग करते हैं, जो अल्प ज्ञान और अल्प बुद्धि हैं। याद रहे कि अधिकतर दुष्ट आत्माओं का अधिकार ऐसे लोगों पर होता है, जो धर्म पर अमल करने के मामले में कमज़ोर हों तथा उनके हृदय एवं

ज़बान ज़िक्र और दुआओं से खाली हों। ऐसे में, दुष्ट आत्माएँ उन्हें शस्त्रहीन पाकर उनपर आक्रमण कर देती हैं।"

इनसान के शरीर में जिन्न के प्रवेश करने के हमारे बयान किए हुए शरई प्रमाणों और अह्ल-ए-सुन्नत व जमात के अग्रणीय विद्वानों के मतैक्य से स्पष्ट है कि इसका इनकार करने वालों का मत तथ्यहीन है और शैख़ अली अत-तनतावी ने इसका इनकार कर बड़ी ग़लती की है।

उन्होंने अपनी बात रखते समय वादा किया था कि यदि सत्य की ओर उनका मार्गदर्शन किया गया, तो वह उसे स्वीकार कर लेंगे। अतः हम आशा करते हैं कि हमारे द्वारा लिखी गई इन बातों को पढ़ने के बाद वह सत्य को मान लेंगे। हम अपने तथा उनके लिए अल्लाह से मार्गदर्शन एवं सुयोग की दुआ करते हैं। हमारी बयान की हुई इन बातों से यह भी मालूम होता है कि अन-नदवा समाचार पत्र द्वारा दिनांक 14/10/1407 को, उसके पृष्ठ 8 में, डॉक्टर मो. इरफ़ान के हवाले से लिखी गई यह बात कि जुनून शब्द चिकित्सा शब्दकोश से विलुप्त हो चुका है तथा उनका यह दावा कि इनसान के शरीर में जिन्न का प्रवेश करना और उसकी ज़बान से उसका बात करना, वैज्ञानिक रूप से एक शतप्रतिशत असत्य अवधारणा है, तथ्यहीन तथा शरई ज्ञान तथा अह्ल-ए-सुन्नत व जमात के अग्रणीय विद्वानों के मतों से अवगत न होने का नतीजा है। एक बात और भी है। इस तथ्य से बहुत-से चिकित्सकों का अवगत न होना, इसके वास्तविक तथ्य न होने का प्रमाण नहीं हो सकता। बल्कि यह उनकी उस तथ्य से आश्चर्यजनक अज्ञानता का प्रमाण है, जिससे ऐसे धार्मिक विद्वान अवगत हैं, जो अपनी सच्चाई, अमानतदारी और धर्म की सही समझ के लिए जाने जाते हैं। बल्कि जिसपर अह्ल-ए-सुन्नत व जमात का मतैक्य है। हम पीछे पढ़ आए हैं कि शैख़ुल इस्लाम इब्न-ए-तैमिया ने इसे तमाम इस्लामिक विद्वानों के हवाले से नक़ल किया है। उन्होंने अबुल हसन अशअरी के हवाले से भी नक़ल किया है कि उन्होंने इसे अह्ल-ए-सुन्नत व जमात से नक़ल किया है। इसी तरह इसे अबुल हसन अशअरी से अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह शिबली हनफ़ी (मृत्यु 799 हिजरी) ने भी अपनी किताब

"आकाम अल-मरजान फ़ी ग़राइब अल-अख़बार व अहकाम अल-जान्न" के 51वें अध्याय में भी नक़ल किया है।

पीछे इब्न अल-क़य्यिम की बात में गुज़र चुका है कि पहली पंक्ति के चिकित्सक तथा चिकित्सा विज्ञान से संबंध रखने वाले विवेकी लोग इस बात को मानते हैं और इसका विरोध नहीं करते। इसका इनकार केवल अज्ञान, निचले स्तर के एवं धर्म विरोधी चिकित्सक ही करते हैं। इसलिए पाठकों को चाहिए कि हमारी बताई हुए बातों को अच्छी तरह समझ लें, उन्हें मज़बूती से पकड़े रहें और अज्ञान चिकित्सकों तथा इस संबंध में बिना किसी प्रमाण के केवल अज्ञान चिकित्सकों और मोतज़िला आदि कुछ बिदअतियों की बातों को दोहराने वालों के धोखे में न आएँ।

नोट

हमने पीछे अल्लाह के रसूल सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो सहीह हदीसें और इस्लामिक विद्वानों के कथन नक़ल किए हैं, उनसे स्पष्ट है कि जिन्न को संबोधित करना, उसे उपदेश देना, समझाना और इस्लाम की ओर बुलाना तथा उसका इन बातों को मान लेना अल्लाह के उस कथन के विरुद्ध नहीं है, जो उसने सूरा साद में सुलैमान अलैहिस्सलाम की ज़बानी कहा है : "हे मेरे रब! मुझे क्षमा कर तथा मुझे ऐसा राज्य प्रदान कर, जो मेरे पश्चात किसी और के लिए उचित न हो।" इसी तरह उसे भलाई का आदेश देना, बुराई से रोकना और पीड़ित के शरीर से निकलने से मना करे, तो उसकी पिटाई करना भी उल्लिखित आयत के विरुद्ध नहीं है। बल्कि जिस प्रकार अत्याचारी इनसान को रोकना, पीड़ित की मदद करना, भलाई का आदेश देना और बुराई से रोकना ज़रूरी है, उसी तरह यह कार्य भी अनिवार्य है। जबकि एक सहीह हदीस पीछे गुज़र चुकी है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "मैंने उसकी गरदन पकड़कर दबाया, यहाँ तक कि उसकी राल निकल आई।" और आपके हाथ पर गिरने लगी। तथा आपने फ़रमाया : "अगर मेरे भाई सुलैमान की दुआ न होती, तो वह सुबह तक बँधा रहता और लोग उसे देख पाते।" जबकि सहीह मुस्लिम की एक रिवायत में अबू दरदा रज़ियल्लाहु अनहु से वर्णित है कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : "अल्लाह का शत्रु इबलीस एक उल्का लेकर आया कि उसे मेरे चेहरे पर डाल दे। अतः, मैंने तीन बार कहा : मैं तुझसे अल्लाह की शरण में आता हूँ। फिर तीन बार कहा : मैं तुझपर अल्लाह की पूर्ण लानत करता हूँ। लेकिन फिर भी पीछे नहीं हटा, तो मैंने उसे पकड़ने का इरादा कर लिया। अल्लाह की क़सम! यदि हमारे भाई सुलैमान की दुआ न होती, तो वह सुबह मस्जिद में बँधा हुआ मिलता और मदीना वासियों के बच्चे उससे खेल रहे होते।" हदीस की किताबों में इस आशय की बहुत-सी हदीसें मौजूद हैं। इसी तरह इस्लामी विद्वानों ने भी इस संबंध में बहुत कुछ कहा है।

मुझे लगता है कि हमारे द्वारा लिखी गई यह संक्षिप्त पुस्तिका सत्य की खोज में लगे हुए लोगों के लिए पर्याप्त है। मैं अल्लाह से, उसके सुंदर नामों और ऊँचे गुणों के वास्ते से दुआ करता हूँ कि हमें तथा सारे मुसलमानों को अपने धर्म को समझने, उसपर जमे रहने, सही बात कहने तथा सही कर्म करने का सुयोग प्रदान करे और हमें तथा तमाम मुसलमानों

को बिना ज्ञान के धर्म के बारे में बात करने और जिस बात का ज्ञान न हो उसका इनकार करने से बचाए। निस्संदेह यह सारे कार्य अल्लाह ही करता है और वही इसकी क्षमता रखता है।

अल्लाह तआला की कृपा एवं शांति की बरखा बरसे अल्लाह के बंदे, उसके रसूल और हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनके परिजनों, साथियों तथा निष्ठा के साथ अनुसरण करने वालों पर।

विषय सूची

प्रस्तावना 3

जादू, ग़ैब की बात बताने और इससे संबंधित बातों के बारे में इस्लामी दृष्टिकोण [1] 5

पत्नी का पति पर जादू करना [16] 15

जादूगरों तथा नज़रबंदी का करतब दिखाने वालों से कुछ पूछने के संबंध में शरई दृष्टिकोण [18] 18

ऐसे लोक चिकित्सक से इलाज करवाना, जो जिन्नात की सेवा लेता हो 21

जादू का शरई इलाज [22] 23

इनसान के अंदर जिन्न के प्रवेश करने तथा इसका इनकार करने वाले के खंडन में दोटूक बातें [28] 27

नोट 39

विषय सूची 41